# भारत में गरीबी

## गरीबी

- वह स्थिति जिसमे समाज का एक हिस्सा अपने जीवन की मूल आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असमर्थ होता है|
- यह दो प्रकार की होती है-
  (a) सम्पूर्ण गरीबी
  (b) तुलनात्मक गरीबी

## (a) सम्पूर्ण गरीबी

- इसमें हम जीवन में आवश्यक वस्तुओं की निम्नतम मात्रा का कुल मान ज्ञात करते हैं(एक आंकड़ा जो प्रति व्यक्ति उपभोक्ता व्यय को व्यक्त करता है)|
- जिस जनसंख्या का आय-स्तर (या व्यय) इस कुल मान से कम होता है उसे **गरीबी रेखा के नीचे(BPL)** माना जाता है|
- गरीबी के इस मापांक में, हमने गरीबों की संख्या को कुल जनसंख्या के समानुपात माना है| इस मापांक को मुख्य गणना अनुपात के नाम से भी जाना जाता है| उदाहरण: जनसंख्या का 13%, BPL है|
- हम आय के बजाय उपभोग व्यय विधि को प्राथमिकता क्यों देते हैं- प्रति व्यक्ति आय में, हम आपस में निर्भर लोगों(बच्चे, वरिष्ठ नागरिक इत्यादि) को अलग नहीं कर सकते, जो कि उपभोग कर रहे हैं किन्तु उपार्जन(कमाना) नहीं कर रहे हैं| इसलिए, आंकड़ों की सही गणना के लिए, हम आय की तुलना में उपभोग व्यय विधि को अधिक प्राथमिकता देते हैं|

## (b) तुलनात्मक गरीबी

- इस प्रकार की गरीबी में व्यक्ति, निम्नतम गरीबी रेखा(BPL) के ऊपर हो सकता है किन्तु अन्य व्यक्तियों की तुलना में गरीब ही होता है जिनकी आय उसकी आय/उपभोग से अधिक है|
- इस प्रकार की गरीबी में, विभिन्न प्रतिशत समूहों में जनसंख्या की आय गणना/ उपभोग वितरण का अनुमान लगाया जाता है और उनकी तुलना की जाती है|
- यह कुल जनसंख्या के बीच उपस्थित असमानता प्रदान करता है|
- **Quintile ratio(पंचमक अनुपात)** इस असमानता का ही एक माप है|
- पंचमक आय अनुपात= सबसे अमीर 20% की औसत आय/ सबसे गरीब 20 व्यक्तियों की औसत आय

BYJU'S EXAM PREP

BYJU'S EXAM PREP SUBSCRIBE

## ब्रिटिश भारत मे गरीबी का अनुमान

- गरीबी का **सर्वप्रथम** अनुमान **दादाभाई नौरोजी** द्वारा उनकी पुस्तक "Poverty and un-British rule in India" में 1901 में प्रकाशित हुआ|
- 1936 में, राष्ट्रीय योजना समीति ने संयुक्त भारत में गरीबी के बारे में विचार दिया| किन्तु उनके द्वारा दिए गए आंकड़ों को भारत में गरीबी के रूप में नहीं माना गया|

## स्वतन्त्र भारत में गरीबी का अनुमान

### (A) डॉ. V.M. दांडेकर एवं निलान्था रथ(1968-69)

- निश्चित वंचित न्यूनतम पोषण = 2250 कैलोरी/दिन
- पिछड़े क्षेत्रों में, इस मात्रा में पोषण खरीदने हेतु आवश्यक राशि - 170 रूपये/वर्ष
- शहरी क्षेत्रों में, इस मात्रा में पोषण खरीदने हेतु आवश्यक राशि - 271 रूपये/वर्ष
- इस सन्दर्भ के प्रयोग से, उन्होंने देखा कि पिछड़े क्षेत्रों के 40% एवं शहरी क्षेत्रों के 50%, 1960-61 में गरीबी रेखा से नीचे थे|

### (B) योजना आयोग विशेषज्ञ समूह

- गरीबी रेखा अवधारणा को सर्वप्रथम 1962 में योजना संगठन के योजना आयोग **कार्य समूह** द्वारा प्रस्तुत किया गया था|

### (i) Alagh Committee(अलघ समीति)

- **अध्यक्ष- Y K अलघ**
- 1979 तक गरीबी का मूल्यांकन आय की कमी के आधार पर होता रहा, किन्तु 1979 में **Y K अलघ समीति** ने घरेलू प्रति व्यक्ति खपत व्यय के आधार पर एक नया तरीका अपनाया|
- इस समीति ने **भारत में प्रथम गरीबी रेखा** को परिभाषित किया|
- पिछड़े क्षेत्रों में समीति द्वारा सुनिश्चित किया गया प्रतिदिन उपभोग = 2400 कैलोरी/दिन शहरी क्षेत्रों में समीति द्वारा सुनिश्चित किया गया प्रतिदिन उपभोग = 2100 कैलोरी/दिन विशेष- पिछड़े भारत में उपभोग का मान उनके द्वारा किये गए शारीरिक श्रम के कारण अधिक रखा गया था|

### (ii) लकडावाला समीति

- 1989 में बनाई गयी|
- **अध्यक्ष- D.T. लकडावाला**
- 1993 में जांच/रिपोर्ट जमा की गयी|
- पिछड़े क्षेत्रों में समीति द्वारा सुनिश्चित किया गया प्रतिदिन उपभोग = 2400 कैलोरी/दिन

- शहरी क्षेत्रों में समीति द्वारा सुनिश्चित किया गया प्रतिदिन उपभोग = 2100 कैलोरी/दिन
- समीति ने गरीबी के अनुमान के लिए CPI-IL एवं CPI- AL का प्रयोग किया|
  **विशेष-** CPI-IL (Consumer Price Index for Industrial Labourers)
  CPI-AL (Consumer Price Index for Agriculture Labourers)
- **परिणाम-**
  1993-94 में BPL के अंतर्गत कुल व्यक्ति थे = 36%
  2004-05 में BPL के अंतर्गत कुल व्यक्ति थे = 27.5%

## (ii) तेंदुलकर समीति

- 2005 में बनाई गयी|
- **अध्यक्ष- सुरेश तेंदुलकर**
- इसकी रिपोर्ट 2009 में जमा की गयी|
- कैलोरी आधारित अनुमान को पोषण, स्वास्थ्य एवं अन्य व्यय के आधार पर परिवर्तित किया|
- एक नया शब्द Poverty Line Basket (PLB) प्रस्तुत किया जो कि गरीबी रेखा निश्चित करने वाली सभी चयनित वस्तुओं की एक टोकरी(basket) को प्रदर्शित करता है|
- उपभोग मात्रा दोनों पिछड़े एवं शहरी क्षेत्र के लोगों के लिए समान निश्चित की गयी किन्तु मूल्य में अंतर है-
  ग्रामीण/पिछड़े क्षेत्रों के लिए दैनिक प्रति व्यक्ति व्यय- 27 रूपये
  शहरी क्षेत्रों के लिए दैनिक प्रति व्यक्ति व्यय- 33 रूपये
  **परिणाम-**
  कुल गरीबी- 37.2% (वर्ष 2004-05 में)
  पिछड़े- 41.8% (वर्ष 2004-05 में)
  शहरी- 25.7% (वर्ष 2004-05 में)

## (iii) रंगराजन समीति

- जून 2012 में बनाई गयी|
- **अध्यक्ष- रंगराजन**
- इसकी रिपोर्ट जून 2014 में जमा की गयी|
- दोबारा, भूतकाल में की गयी कैलोरी आधारित विधि को अपनाया गया|
  ग्रामीण के लिए दैनिक प्रति व्यक्ति व्यय- 33 रूपये
  शहरी के लिए दैनिक प्रति व्यक्ति व्यय- 47 रूपये
- **परिणाम-**
  कुल गरीबी- **29.5%** (वर्ष 2011-12 में)
  पिछड़े- 30.9% (वर्ष 2011-12 में)
  शहरी- 26.4% (वर्ष 2011-12 में)

BYJU'S EXAM PREP
SUBSCRIBE BYJU'S EXAM PREP

### (C) भारतीय रिज़र्व बैंक रिपोर्ट 2012

- निम्नतम गरीबी वाला राज्य- **गोवा** (5.09%)
- संघीय क्षेत्र में निम्नतम गरीबी- **अंडमान एवं निकोबार** (1%)
- सर्वाधिक गरीबी वाला राज्य- **छत्तीसगढ़** (39.93%)
- संघीय क्षेत्र में सर्वाधिक गरीबी- **दादरा एवं नगर हवेली** (39.31%)

### (D) विश्व बैंक रिपोर्ट

- **गरीबी रेखा-**
  जिसकी आय **1.90 $ प्रतिदिन** से कम है|

- **विश्व बैंक रिपोर्ट 2015 के अनुसार-**
  2011 में भारत में =12.4 % लोग गरीबी रेखा के नीचे थे|

### (E) एशियाई विकास बैंक रिपोर्ट

- 2015 एशियाई विकास बैंक रिपोर्ट के अनुसार, भारत में गरीबी = 21.9% (2014 के लिए)

byjusexamprep